

अस्तु 1) n. Blut AK. 2, 6, 2, 15. H. 619. 621. MED. 4. 20. Vop. 3, 39. 134. 165. भूम्या अस्तरुमात्मा वा स्वित्र RV. 1, 164, 4. अस्तुके अस्थिरास्तु AV. 4, 12, 4. nom. acc. Ait. Br. 2, 9. ÇAT. Br. 1, 9, 2, 35. 3, 8, 2, 14. 10, 1, 4, 7. 4, 1, 17. ÂCT. GṚHJ. 4, 9. Nir. 4, 19. M. 4, 167. 169. 3, 135. im comp. M. 3, 182. Hit. 21, 14. instr. अस्तुना R. 3, 8, 4. gen. अस्तुना SUGR. 2, 129, 8. Vgl. अ-मन् und अस्त्र 3. — 2) n. Safran (wie alle Synonym. von Blut) RĪG. im ÇKDR. — 3) m. N. eines Joga MED. 4. 20. विष्कम्भादिमत्तविश्रान्तियोगात्तर्गतयो-ऽश्रयेणः । तत्र ज्ञानफलम् । धनी कुत्रापि कुमतिर्दुरात्मा विदेशगामी रुधिरप्रकायः । मकाप्रलोभी पुरुषो बलीयानमृकप्रभूति किल यस्य ज्ञोः ॥ KOSHTHĪR. im ÇKDR.

अम्याद m. und ऽटी f. = अमृक्यात (und auch daraus entstanden) SĀRAS. zu AK. 3, 6, 5, 38. ÇKDR.

अमेचन adj. woran sich das Auge nicht satt sehen kann HĪR. 220. = अमेचनक AK. 3, 2, 2. Scheinbar von 3. अ + मेचन. — Vgl. अमेचनक.

अमेन्य (3. अ + मे) adj. nicht treffend, nicht verwundend, ungefährlich: अमेन्या यः पाण्यो वयोनि RV. 10, 108, 6.

अमैकार् (अमौ, nom. sg. zu 1. अद्म् + कार् thun) gaṇa सात्तादि zu P. 1, 4, 74.

अमौनामन् (अमौ + नामन्) adj. den und den Namen führend ÇAT. Br. 14, 4, 2, 15 = BṚH. ÂR. Up. 1, 4, 7.

अम्यक (3. अ + स्वात् von स्कन्द) adj. 1) unverspritzt, unverschüttet: अम्यन् VS. 2, 8. कवि: ÇAT. Br. 1, 1, 4, 3. 3, 8, 1, 14. 13, 1, 3, 1. — 2) nicht (mit Samen, bespritzt, belegt: अम्यकौ वत्सतरीमात्रंति Ait. Br. 1, 2, 7.

अम्यम्भन (3. अ + स्वा) n. Abwesenheit einer Stütze: अम्यम्भने सविता धामंदेहन् RV. 10, 149, 1.

अम्यधायु (3. अ + स्कु) adj. nicht knapp, reichlich Nir. 6, 3. (रयि:) यो अम्यधायुर्नरः स्वर्धात्मा भर RV. 6, 22, 3. अम्यधित्या वा कर्द्विषो अ-भिष्टो यवामित्रावरुणावम्यधायु 67, 11. (रत्नधेयम्) अस्मे धत्ते यदम्यधायु 7, 33, 2.

1. अस्त part. praet. pass. von 2. अम् (s. d.).

2. अस्त 1) n. Heimath, Heimweesen NāIG. 3, 4. तमग्निमस्ते वम्यो न्यु-एवन् RV. 7, 1, 2. अम्येयामस्तमुप नक्तमेति 10, 34, 10. पत्युरस्ते परियेय AV. 4, 1, 13. 14, 2, 13. गृहा वा अस्तम् ÇAT. Br. 2, 3, 2, 29. — 2) davon अस्तम् adv. heim, daheim; gewöhnlich mit इ, गम् या (heimkehren), वहु (heim-führen): अस्तमिन्द्र प्र याहि RV. 3, 33, 6. 4, 16, 10. अस्तं नवस्व इव गमन् 34, 5. 1, 66, 9 (5). 116, 25. अस्तमेहि गृहा उप 10, 86, 12. 5, 6, 1. 49, 12. 7, 37, 4. 10, 14, 8. 83, 33. 86, 21. 93, 2, 13. VS. 3, 47. AV. 4, 13, 6. यदश्चिना उरुर्कुर्बुमुस्तम् RV. 1, 116, 5. 7, 37, 6. 8, 3, 23. — सुपेशाम् माव सृजत्य-स्तम् 5, 30, 13. ज्ञायेदस्तं मधवन्मेडु योनिः 3, 33, 4. 1, 130, 1. Besonders häufig von der Sonne (auch vom Monde) अस्तं गम् इ, या (mit oder ohne Beisetzung von सूर्य, आदित्य u. s. w.) untergehen, wobei अस्तम् in Bezug auf den Accent wie eine praepos. behandelt wird P. 1, 4, 68. Vop. 8, 21. AK. 3, 3, 17. H. 1339. यतः सूर्य उदेत्यस्तं यत्र च गच्छति AV. 10, 8, 16. अथ यदस्तमेति तदग्रावेव योना गभी भूवा प्रविशति ÇAT. Br. 2, 3, 1, 3. 36. 1, 12. 4, 6, 5, 5. 5, 3, 1, 7. u. s. w. 14, 4, 2, 34 = BṚH. ÂR. Up. 1, 3, 23. AK. 2, 7, 54. H. 839. अस्तं गच्छति यत्रकिं गिरौ केमप्रने प्रमे R. 4, 37, 22. अस्तयैत् AV. 9, 6, 54. ऽप्येति 17, 1, 23. अस्तमेप्येति ibid. अस्तमित ibid. Ait. Br. 3, 29. ÇAT. Br. 14, 7, 1, 3—6 = BṚH. ÂR. Up. 4, 3, 3, 4 (चन्द्रमसि). M.

4, 75. 11, 219. स यत्सायमस्तमिते (nach Sonnenuntergang) बुद्धेति ÇAT. Br. 2, 3, 1, 2. 4, 9, 11. 3, 2, 2, 4. 26. 4, 5, 3, 11. KĀTJ. Çr. 4, 7, 24. 8, 3. प्रथमास्तमिते KĀND. Up. 2, 9, 9. नेतेतोद्यत्तमादित्यं नास्तेयात् M. 4, 37. अस्तंगत H. 300. SĀV. 4, 17. Hit. 17, 20. अस्तंगत R. 5, 3, 41. auch getrennt: गते तस्ते दिनकरे R. 1, 33, 21. अस्ते नो zum Untergange geleiten, untergehen lassen: किं स्विदादित्यमुन्नयति के च तस्याभितथाराः । कश्चैनमस्तं नयति MBh. 3, 17330. fg. अस्ते गम्, इ, प्राप् bedeutet auch überh. zur Ruhe eingehen, aufhören, vergehen, sterben: यथा नयः स्य-न्दमानाः समुद्रे ऽस्ते गच्छति MuND. Up. 3, 2, 8. सैयानस्तमिता देवता यदायुः ÇAT. Br. 14, 4, 2, 33 = BṚH. ÂR. Up. 1, 5, 22. विषयिणः कस्यापेदा ऽस्ते-गताः Hit. II, 144. अस्तंगमितमहिमा Megh. 4. दृष्टिनास्तमितविषा KumāRAS. 2, 23. स तस्यो काममंपेवो यदमणा समप्यत । तेनाचिरेण कालेन ज-गामास्तमित्राग्रामान् । MBh. 1, 4697. वौ संस्मरन्नस्तमितः पिता ते R. 2, 102, 9. RAGH. 12, 11. अथ चास्तमिता तमात्मना 8, 50. मतिपतास्तंगतस्ततः KATHĀS. 2, 42. 20, 10. PRAB. 98, 13. अस्ते पितरि प्राप्ते KATHĀS. 13, 74. Daher अस्तम् H. 324 in der Bedeutung Tod. — 3) nach einer spätern Anschauung, die sich wohl aus der adverb. Verbindung अस्तं गम् u. s. w. untergehen herausgebildet hat, ist अस्त m. ein bes. Berg im Westen, hinter dem Sonne und Mond beim Untergang verschwinden, AK. 2, 3, 2. TRIK. 3, 3, 147. H. 1027. an. 2, 158. MED. I. 2. अस्तादि TRIK. 2, 3, 3. VID. 33. HARIV. 12416. 13038. अस्तगिरि Verz. d. B. H. No. 849 (14, 20). आदित्योदयने चास्ते गिरौ R. 4, 37, 4. अतरा मेरुमस्तं च भानाः 43, 51. अ-दृश्यः सर्वभूतानामस्तं गच्छति पर्वतम् 48. 49. 59. अस्तमल्लिकविष्यति कप-यः 54. यथा भास्कारमस्तमूर्धनि 3, 67, 24. याने ऽस्तगिरि रवौ KATHĀS. 23. 236. रविरग्न्यानुयातव्यो यावदस्तमयोदयम् R. 4, 60, 8. अस्तोपगतस्य भानाः 3, 48, 19. अस्तनिमग्नसूर्य RAGH. 16, 11. नयति गिरिं नयनैः शशाङ्कमस्तम् R. 5, 34, 22. यात्यस्तगिरिं पतिरायथीनाम् ÇAK. 77. अस्ताचनचूटावनम्वि-नि — चन्द्रमसि Hit. 9, 5, v. l. — In सूर्यास्तप्रत्येकम् jeden Tag beim Sonnenuntergang PAÑKĀT. III, 187 ist अस्त gleichbedeutend mit अस्तमय.

— 4) astrol. das siebente Haus Ind. St. 2, 281, 21. n. 276, 7. m. Dhikā im ÇKDR. — Vielleicht von 1. अस्; vgl. अयस्तम्.

अस्तक (von 2. अस्त) 1) n. Heimath, Haus: आर्हता अस्माकं वीरा आ पत्नीरिदमस्तकम् AV. 2, 26, 5. Vgl. स्वस्तक. — 2) m. Eingang in die ewige Ruhe, ewige Glückseligkeit (मोक्ष) TRIK. 1, 1, 134.

अस्तगमन (2. अस्त + ग) n. Untergang: प्रागस्तगमनादवेः MBh. 1, 6038.

अस्तताति (von 2. अस्त) f. Heimweesen, Heimath: अस्ततातिं चिदायेव RV. 5, 7, 6.

अस्तम् s. 2. अस्त 2.

अस्तमती f. N. eines Strauchs, Desmodium gangeticum DC. (मालप-णी), ÇABDAR. im ÇKDR. — Wohl nur eine Variante von अष्टमती.

अस्तमन n. Untergang (der Sonne). MBh. 1, 563. 3, 8782. 11891. fg. 13087. 15384. R. 5, 9, 46. PAÑKĀT. II, 7. 139, 24. 163, 20. 164, 4. 172, 8. 193, 5. 228, 14. — Aus अस्तमयन verstümmelt wie अतरणा aus अतरयाण.

अस्तमय (von अस्तम् + इ) m. dass. ÇAT. Br. 2, 3, 1, 7. 8. 3, 2, 1, 26. 9, 2, 7. 4, 5, 3, 11. KĀTJ. Çr. 7, 4, 13. KĀND. Up. 2, 9, 8. KATHOP. 6, 6. KATHĀS. 18, 59. Uebertr.: उदयमस्तमयं च रघूदकादुभयमानशिरे वमुधाधिपाः RAGH. 9, 9. कुर्वन्ति सामन्तशिखामणीनो भ्रात्रेराकास्तमयं रवोसि 6, 33.